हमारी मीरास

बख्त सिंह

परिचय

यहोशू की पुस्तक में हमें यह समझाया गया है, कि कैसे हमारा प्रेमी और जीवित परमेश्वर चाहता है कि हम विश्वास के द्वारा अपनी महान आत्मिक मीरास के अधिकारी बन जायें। परमेश्र ने इस्त्राएल की सन्तान को मिस्त्र से छुड़ाया तब इसके पीछे उसका यही उद्देश्य था कि उन्हें धन से भरपूर और उपजाऊ कनान की भूमि, पैतृक सम्पत्ति के रुप में दे दे। इसी प्रकार प्रभु यीशु मसीह भी न केवल हमारे पापों को क्षमा करते हैं, किन्तु यह भी चाहते हैं, कि हम अपनी उस स्वर्गीय मीरास में अपना पूरा भाग प्राप्त करें जो कि, "अविनाशी, निष्कलंक और अमिट है और ..... स्वर्ग में सुरक्षित है" (१ पतरस १:४)। पौलुस प्रेरित इसे "ज्योति में पवित्र लोगों के साथ उत्तराधिकार" कहता है, (कुलुस्सियों १:१२) और इफिसियों १:१४ में कहता है, कि हमारे इस उत्तराधिकार के बयाने के रुप में पवित्र आत्मा हमें दिया गया है।

कनान की भूमि प्रभु यीशु मसीह में हमारी आत्मिक मीरास की परछाई है। उन दिनों में कनान ऊपजाऊ भूमि का देश था। वह पानी तथा श्रेष्ठ फलों की बहुतायत का स्थान था। मिस्त्र देश में इस्त्राएल की सन्तान को गुलाम (दास) बनकर रहना पड़ता था और कड़ा परिश्रम करना पड़ता थ। पर अब कनान में हर चीज बहुतायत के साथ थी। कनान परमेश्वर की उस भरपूरी को दर्शाता है जिसका आनन्द कुलुस्सियों २:९, १० के अनुसार हम प्रभु यीशु मसीह में प्राप्त कर सकते हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम उस भरपूरी को विश्वास के द्वारा प्राप्त करें। अनन्त जीवन हम एक दान क रुप में प्राप्त करते हैं, परन्तु मीरास में अपना भाग हम विश्वास के द्वारा दावा करने तथा दिन प्रति दिन उसे अपनाने के द्वारा प्राप्त करते हैं। जिस प्रकार एक धनाढ्य घराने में पैदा हुआ बालक अपने आप उस घराने की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बन जाता है, उसी प्रकार हम एक विश्वासी

परमेश्वर के घराने में पैदा होने के कारण परमेश्वर की स्वर्गीय मीरास का दावेदार बन जाता है। परन्तु अवश्य है कि उसे विश्वास के द्वारा अपनाया जाये।

अब आइये, हम कुछ ऐसे महत्वपूर्ण विचारों की ओर ध्यान दें, जो हमें अपनी स्वर्गीय मीरास को अपनाने पर अधिक से अधिक लाभ प्राप्ति के लिये आवश्यक है।

१. सरल विश्वास:

यहोशू के दूसरे अध्याय में दी गई राहाब की कहानी हमें यह सिखाती है कि हम किस प्रकार से अपनी मीरास को प्राप्त कर सकते हैं। परमेश्वर इस्त्राएल की सन्तान को जो महान मीरास देना चाहता था उस में एक अन्य जाति वेश्या राहाब को उसके अपने घराने या राष्ट्रीयता के आधार पर कोई अधिकार नहीं था। शायद यही एक कारण था कि उसका घर शहर के भीतर न होकर शहर की दीवार पर था। आश्चर्य की बात है कि इस तुच्छ जानी गई स्त्री में इस्त्राएल के महान परमेश्वर के प्रति जीवित विश्वास था। परमेश्वर ने अपने लोगों के लिये किये हुये अद्भुत कामों के विषय में शहर में रहनेवाले अन्य लोगों ने भी सुना था और वे भय से भरे हुए थे। परन्तु राहाब, भेदियों से कह सकी, "..... तुम्हारा परमेश्वर यहोबा ऊपर के आकाश का और नीचे की पृथ्वी का परमेश्वर है" (पद ११)। वह यहाँ तक विश्वास करती थी कि परमेश्वर ने इस्त्राएलियों को वह भूमि पहले से ही दे दी थी। उसने विश्वास के द्वारा यह देखा कि किस प्रकार यरीहो शहर पर और उसके निवासियों पर परमेश्वर का न्याय आएगा, और इसीलिये उसने स्वयं अपने घराने के छुटकारे के लिये बिनती की। उस समय तो इस्त्राएल की सन्तान यर्दन तक भी नहीं पहुँचे थे और फिर कनान की भूमि सात बड़े-बड़े राज्यों के आधीन थी। परन्तु राहाब यह कह सकी कि भूमि इस्त्राएलियों को पहले दे दी गई है (पद ९)। ऐसे विश्वास से वह परमेश्वर के लोगों की मीरास में आई। उस समय उसे उस मीरास में अपने भाग के सम्बन्ध में कोई कल्पना नहीं थी। वह तो केबल आने वाले न्याय से बचने के विषय सोच रही थी। परन्तु परमेश्वर ने उसे न केवल उसके पापमय जीवन से छुड़ाया, परन्तु वह उसे पवित्र और चुने हुये लोगों के बीच ले आया। इस प्रकार से वह राजा दाऊद की परदादी बनी (मत्ती १:५), और आगे चलकर उसी घराने से प्रभु यीशु मसीह पैदा हुये। इस प्रकार, सर्वप्रथम हम

देखते हैं कि कैसे जीवित और सच्चे परमेश्वर पर विश्वास करने के द्वारा वह मीरास के अन्तर्गत लाई गई।

२. हिस्सा बँटाना:

फिर हम यह देखते हैं कि राहाब को अपने घराने की चिन्ता थी। उसने भेदियों से बिनती की, कि वे उन्हें जीवित बचा लेंगे (पद ११, १२)। इसी प्रकार से हर एक विश्वासी प्रेरितों के कार्य १६:३१ के अनुसार अपने घराने के लिये उद्धार का दावा कर सकता है। जब हम विश्वास के द्वारा अपने सम्बन्धियों के लिये उद्धार का दावा करेंगे, तब हमें महान आत्मिक मोरास में पूर्ण साझेदारी दी जायेगी। बहुत से लोग कहते हैं कि वे नया जन्म पा चुके हैं; परन्तु जब हम उसने पूछते हैं, कि क्या वे अपने घराने के उद्धार न पाये हुये सदस्यों एवं मित्रों के लिये प्रार्थना कर रहे हैं, तब उनके पास कोई उत्तर नहीं होता। यदि हम अपने सम्बन्धियों के उद्धार के लिये चिन्तित होंगे तो हमें मीरास में पूरा हिस्सा मिलेगा। हमें अवश्य ही परमेश्वर की प्रतिज्ञा का दावा करना चाहिये, और जिन्होंने उद्धार नहीं पाया है उनके लिये लगातार निवेदन करते रहना चाहिये। हमें अपनी प्रार्थनाओं के जवाब के लिये बहुत लम्बे समय तक रुकना पड़ सकता है, परन्तु बिना निरुत्साहित हुये हमें लगातार प्रार्थना करना चाहिये तथा सम्पूर्ण घराने के लिये छुटकारे का दावा करना चाहिये।

३. लोहू का छिड़काव:

तब राहाब ने लाल रंग के सूत की डोरी को अपने घर की खिड़की पर बाँध दिया (पद २१)। इसका आशय है, कि विश्वास के द्वारा वह लोहू का छिड़काव के आधीन आ गई। भेदियों ने उसे बताया होगा कि मिस्त्र में किस प्रकार अपने दरवाजों के चौखट पर लोहू का छिडकाव करने के कारण वे नाश करने वले स्वर्गदूत से छुडाये गये थे। राहाब ने

अपने समस्त घराने को एकत्रित किया और विश्वास के द्वारा लाल रंग के सूत की डोरी को अपनी खिड़की पर बाँधा, जिसका तात्पर्य यह था कि वह उन सभों को लोहू के आधीन ले आई, और इस प्रकार से वह और उसका घराना आनेवाले न्याय से बचा लिये गये। उसने यह बिना समय गँवाये किया, जबकि सच्चाई यह थी, कि यहोशू और इस्त्राएल की सन्तान उस स्थान से अभी बहुत दूर थे। यद्यपि वह जानती थी कि यरीहो एक दृढ़ शहर था; उसकी दिवारें बहुत चौड़ी और जमबूत थी, तथा उस में इस्त्राएल के विरुद्ध लडनेवाले बहुत सामर्थी योद्धा थे। फिर भी वह जीवित परमेश्वर की विजय पर विश्वास करती थी और उसका विश्वास दृढ़ और महान था। इसीलिये बिना किसी देरी के उसने लाल रंग की सूत की डोरी बाँधी। केवल विश्वास, सरल विश्वास के द्वारा ही हम उद्धार का दावा कर सकते हैं, और इस तरह से महान स्वर्गीय मीरास के लिये अपने आप को तैयार पाते हैं।

४. **सामर्थी कप्तान:**

तब इस्त्रालियों का यर्दन को पार कर कनान में प्रवेश करने का समय आया। वे बहुत ही असामान्य तरीके से नदी के उस पार गए। इससे हमें उस मार्ग का और अधिक ज्ञान होता है, जिससे होकर हम मसीह यीशु में अपनी मीरास में प्रवेश करके उसका आनन्द उठा सकते हैं। परमेश्वर ने निर्देश दिया, "परन्तु उसके (परमेश्वर की वाचा का सन्दूक) और तुम्हारे बीच में दो हजार हाथ के अटकल अन्तर रहे; तुम सन्दूक के निकट न जाना। ताकि तुम देख सको कि किस मार्ग से तुम को चलना है, क्योंकि अब तक तुम इस मार्ग पर होकर नहीं चले" (यहोशू ३:४)। वाचा का सन्दूक लिये हुए याचक जब प्रतिज्ञा किये हुए देश में प्रवेश करने पर थे, तो सर्वप्रथम परमेश्वर स्वयं ही उनके आगे आगे जा रहा था ताकि उनकी ओर से लड़े। उनकी स्वयं की सामर्थ्य, शक्ति अथवा योग्यता के द्वारा उनके लिये नदी को पार करना अथवा कनानी, हित्ती, यबूसी, हिव्वि, परिज्जि, गिर्गाशि

तथा एमोरी कहलानेवाले उन सामर्थी दुश्मनों को पराजित करना सम्भव नहीं था, जिन्होंने उस देश को अपने अधिकार में रखा था। वाचा का सन्दूक उन्हें यह याद दिलाने के लिये था, कि जीवित एवं सामर्थी परमेश्वर स्वयं ही उनके शक्तिशाली कप्तान के रुप में उनके साथ था। वह उनकी अगुवाई करने तथा उनके शत्रुओं को उनके सामने से खदेड़ने के लिये उनके साथ था, तथा उन्हें अपनी ही सामर्थ, या योग्यता या युद्ध के शस्त्रों पर भरोसा नहीं रखना था।

५. पूरी आधीनता:

वैसे देखा जाये तो, यर्दन नदी न बहुत चौडी है, न ही बहुत गहरी। वह २५-३० फुट से अधिक चौडी नहीं है। इस्त्राएल की सन्तान उसके ऊपर पुल बना सकते थे अथवा उसे पार करने के लिये नावों का प्रयोग कर सकते थे। परन्तु परमेश्वर ने उन्हें निर्देश दिया था कि वाचा का सन्दूक ढोनेवाले याजक पहिले जायेंगे और अन्य लोग उनके पीछे जायेंगे। जैसे ही याजकों के पैरों ने पानी को छुआ, पानी विभाजित हो गया। लोग सूखी भूमि से होकर उस पार चले गये; यर्दन का पानी हमारे पाप युक्त शारीरिक स्वभाव को दर्शाता है, जो कि हमें हमारी मीरास पर अधिकार करने से रोकता है। इस शारीरिक स्वभाव पर जय पाने के लिये जब तक हम अपनी ही इच्छाशक्ति तथा सामर्थ्य पर भरोसा करते हैं, हम पराजित होते रहेंगे; परन्तु प्रभु यीशु मसीह जब हमारे जीवन का संचलन करते हैं, केवल तभी हम विजय का आनन्द उठा सकते हैं।

पौलुस प्रेरित अपने समय का एक बहुत अधिक शिक्षित व्यक्ति था। वह कह सकता था कि व्यवस्था के अनुसार धार्मिकता के विषय में वह निर्दोष था। फिर भी उसने अपनी मानवीय योग्यताओं पर भरोसा नहीं रखा, परन्तु उसने कहा कि उसे शरीर पर कोई विश्वास नहीं था (फिलिप्पियों ३:३)। उसने यह भी कहा, "...मैं नहीं, परन्तु प्रभु यीशु

...।" जिस प्रकार, नदी पार करने के लिये इस्त्राएल की सन्तान के पास अपनी स्वयं की कोई योजना नहीं थी परन्तु वे परमेश्वर की दी हुयी योजना के प्रति पूरी तरह आज्ञाकारी थे। उसी प्रकार हमें प्रभु यीशु मसीह को अपने स्वर्गीय राजा के रुप में अपने हृदयों में सिंहासन पर बैठाना चाहिए और हमें उसके पूरे अधिकार के आधीन आना चाहिए। जिस प्रकार से याजकों के पैर छूते ही पानी विभाजित हो गया, उसी प्रकार से हम परमेश्वर की सामर्थ्य को अपने हित में कार्य करते और विजय की ओर हमारी अगुवाई करते पायेंगे। दिन प्रति दिन हमें अपने हृदयों में अनेक युद्धों का सामना करना पडता है, क्योंकि शैतान हमें घृणा, शत्रुता, ईर्ष्या, लालसा, अशुद्धता, लालच, घमण्ड आदि के विचारों के द्वारा उसकांता है। ये अभिलाषायें, भावनायें और विचार हमारे स्वयं की शक्ति, ज्ञान और चालाकी के द्वारा जीती नहीं जा सकती।

हमें विश्वास के साथ कहना चाहिए, "हे प्रभु यीशु, मैं स्वयं इस पापमय इच्छाओं पर विजय नहीं पा सकता। ये मुझे परेशान कर रही हैं। कृपया आप इन्हें मेरे बदले जीतिये।" केवल तभी हम उसकी विजय का आनन्द उठा सकते हैं।

६. सच्चा अनुकरण:

यर्दन नदी को पार करने के पश्चात इस्त्राएल की सन्तान की ऊँची दीवारों के शहर यरीहो की जीतना था। परमेश्वर ने उन्हें बताया कि यदि वे उसका अनुकरण करके उसके पीछे पीछे चलेंगे तथा उसकी आज्ञाओं को मानेंगे तो वे शत्रु को पराजित हुआ देख सकेंगे। परमेश्वर ने इस्त्राएलियों को स्पष्ट बताया कि वे पहले कभी इन मार्गों से नही गुजरे हैं इसलिये वे मिस्त्र में प्राप्त अपने ज्ञान पर या बीते हुए अपने अनुभवों पर भरोसा नहीं रख सकते। केवल परमेश्वर ही मार्ग जानता था, और वही उनकी अगुवाई कर सकता था। उन्हें केवल उसका अनुकरण करना था।

कनान के भिन्न-भिन्न नगर भिन्न-भिन्न तरह से जीते गये। ऐ को उसी प्रकार से नहीं जीता गया जिस प्रकार से यरीहो जीता गया था। हर समय परमेश्वर के पास भिन्न योजना थी। उसने यहोशू को कदम-ब-कदम अपनी योजना दर्शायी और जब उन्होंने दर्शायी गई योजना का पूर्णत: अनुसरण किया तब इस्त्राएल की सन्तान विजय के प्रति निश्चित हो सके। परमेश्वर ने बाचा के सन्दूक और इस्त्राएल की सन्तान के बीच कुछ दूरी का अन्तर छोड़ने को कहा था। इसका कारण यह था कि वे अपनी आँखे वाचा के सन्दूक पर लगाये रह सके और उसके पीछे-पीछे चल सके (यहोशू ३:४)।

७. **समर्पण:**

लोगों को कहा गया था कि यर्दन नदी को पार करने के पहिले वे अपने आप को पवित्र करें (पद ५)। पवित्र करने का अर्थ अपने आपको जीवित परमेश्वर के पूर्ण अधिकार के आधीन लाना है। स्वयं पर, अपने धन पर, संख्या पर अथवा और किसी मानवीय लाभ पर भरोसा रखने के बदले हमें अपने जीवनों को पूरी तौर से प्रभु यीशु को सौंपना चाहिये। तब प्रभु हमारा सारा भार अपने ऊपर ले लेगा और हर परिस्थिति में हम जयवन्त से भी बढ़कर होंगे।

८. **संगति:**

वाचा का सन्दूक याजकों द्वारा ढोया जाना था और शेष लोगों को उनका अनुकरण करना था। हमें भी अपनी पहचान पूरी कलीसिया के साथ स्थापित करनी होती है और इस प्रकार से हम सारी बाधाओं पर सफलतापूर्वक जय पाते है। यह अवश्य है, कि हम दूसरे विश्वासियों की संगति में रहें और मण्डली के निर्माण में अपना पूरा भा गलें। बहुत से विश्वासी दूसरे विश्वासियों के साथ संगति के लिए नहीं मिलते। वे सोचते हैं, कि घर पर

रुक कर कोई अच्छी पुस्तक पढ़ने या अच्छा कार्य करने के द्वारा या ऐसी ही अन्य बातों के द्वारा उन्हें आशीष प्राप्त हो जायेगी। आजकल आप दिन भर रेडियो पर प्रीाु का वचन सुन सकते हैं। बहुत से लोग इन प्रसारणों से ही सन्तुष्ट हो जाते हैं। वे सोचते हैं कि अच्छा संगीत और अच्छा वचन सुनने के द्वारा वे परमेश्वर की सब आशीषें प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु आराधना, प्रार्थना तथा वचन के अध्ययन के लिये इकट्ठा होकर की गई संगति का मूल्य वे नहीं जानते। रेडियो के वचनों, पत्रिकाओं अथवा अच्छी पुस्तकों से आप पूर्ण आशीषें पा लेंगे ऐसा सोचकर आप संगति से दूर न रहें। ऐसा करने के द्वारा आप रक्तहीन और शक्तिहीन बने रहेंगे। आप उन लाभों से वंचित रहेंगे जो विश्वासियों को बारम्बार प्रार्थना की संगति और अन्य संगति से प्राप्त होते है। हमारी शक्ति और वृद्धि एक दूसरे के साथ संगति करने पर निर्भर करती है। प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने, और रोटी तोड़ने और प्रार्थना करने में लौलिन रहने के कारण प्रारम्भिक विश्वासी आत्मिक रुप से वृद्धि करते गए (प्रेरितों के कार्य २:४२)।

९. यथेष्टता:

वाचा के सनृदूक को ढोने वाला याजक उस समय तक पानी में खड़े रहे जब तक कि सारे इस्त्राएलियों ने नदी पार न कर ली। बिना किसी व्यक्ति को छोड़े सभी लोग उस पार चले गये। जहाँ तक परमेश्वर का सवाल है, उसने प्रत्येक विश्वासी के लिये यथेष्ट प्रबन्ध किया है, कि वह मीरास का अधिकारी बन जाए। हम झिझक सकते हैं और यह सोच सकते हैं कि इतना बड़ा अधिकार केवल पौलुस प्रेरित जैसे बड़े व्यक्तियों के लिये हैं। परन्तु एक सरल तरीके से परमेश्वर हमें यह दिखा रहा है कि जो लोग प्रभु यीशु मसीह के क्रूस पर विश्वास रखते हैं वे मीरास में अपना भाग पा सकते हैं। अपनी मानवीय

योग्यता के आधार पर नहीं, परन्तु विश्वास के द्वारा वे निश्चय ही प्रभु यीशु मसीह की विजय का दावा अपने लिये कर सकते हैं।

१०. ऊपर देखना:

पौलुस प्रेरित कुलुस्सियों ३:१, २ में हमें समझाता हैं, कि हम पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय चीजों की खोज करें और स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाएँ। यही बात हमारे स्वर्गीय मीरास पर लागू हो सकी है। जब हमारा नया जन्म नहीं हुआ था तब हम अपनी आमदनी, सम्पत्ति और जायदाद बढ़ाने के बारे में सोचते थे। परन्तु अब परमेश्वर की सन्तान होने के नाते हमारे हृदयों में स्वर्गीय चीजों का ध्यान होना चाहिए। फिर ९ और १० पदों में पौलुस लिखता है, "तुमने पुराने मनुष्यत्व को उसके कार्यो समेत उतार डाला है और नये मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार क स्वरुप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है।" इस्त्राएल के लोगों का नदी को पार करना यही दर्शाता है कि उन्हें पुराने मनुष्यत्व को उतारना पड़ा और पूर्णत: नये जीवन में प्रवेश करना पड़ा। इसी प्रकार विश्वास के द्वारा हम कहते हैं, कि प्रभु यीशु मसीह ने हमारे पापमय स्वभाव के साथ पुराने मनुष्यत्व को दूर कर दिया है। साथ ही साथ हम विश्वास के द्वारा उस जीवन के नयेपन का दावा भी कर सकते हैं जो प्रभु यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने में प्रगट हुआ। उसी जीवन के द्वारा हम स्वर्गीय मीरास को प्राप्त करने के लिये तैयार किए जा सकते हैं।

११. पौष्टिक आहार:

जिस प्रकार अपने दैनंदिन कार्य करने के लिये शारीरिक शक्ति पाने हेतु हमें भोजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार से अपने विभिन्न उत्तरदायित्वों के वहन करने

और विभिन्न परीक्षाओं पर जय पाने के लिये हमें प्रभु यीशु मसीह के जीवन की आवश्यकता होती है। यदि हम उचित रुप से भोजन नहीं खायेंगे तो हमारा शरीर हमारा साथ नहीं देगा। यह भी सम्भव नहीं है कि एक ही बार भोजन खाकर लम्बे समय तक शक्तिशाली बने रहें। हमारे शरीर ऐसे बने हैं कि हमें दिन में दो या तीन बार भोजन करना पड़ता है। यही बात आत्मिक जीवन यें भी सही उतरती है। शक्तिशाली बनने के लिये यह आवश्यक है, कि हम प्रभु मसीह के जीवन को लेते रहें। हम उसे दिन प्रतिदिन कह सकते हैं, "प्रभु, आपका जीवन मेरा जीवन है। मैं वही जीवन आज के कर्त्तव्यों और गतिविधियों के लिये चाहता हूँ।" इस प्रकार से हम सामर्थी बन सकते हैं, और अपनी दुर्बलताओं पर विजय पा सकते हैं। नहीं तो हम निश्चय ही असफल होंगे और दुर्बल बने रहेंगे।

१२. साफ किया जाना:

इस्त्राएलियों के यर्दन के पार चले जाने के उपरान्त परमेश्वर ने यहोशू को निर्देश दिया कि इस्त्राएल के बारह गोत्रों में से हर गोत्र के अनुसार एक पुरुष चुन ले और यर्दन नदी के बीच से बारह पत्थर ले ले। यही पत्थर गिलगाल में खड़े किय गये (यहोशू ४:२०)।

गिलगाल का अर्थ है, "लुढ़का कर दूर किया हुआ।" मिस्त्र का जीवन अवमानित-तिरस्कृत जीवन था। अब गिलगाल में उनकी यह नामधराई लुढ़का कर दूर कर दी गई थी। परमेश्वर ने उनकी भूतकाल की सारी असफलताएँ, पराजय, लज्जा और नामधराई को लुढ़ाका कर दूर किया और हटा दिया। हमें पराजित रखने के लिये शैतान जिन सामर्थी शस्त्रों को प्रयोग में लाता है, उनमें से एक शस्त्र है, हमें बारम्बार हमारी पूर्व की असफलताओं को याद दिलाते रहना। वह कहता रहता है, 'उस असफलता, उस पराजय और उस पाप का क्या होगा?' इसके कारण हम निराश हो जाते हैं और कहते हैं, "मेरे

जैसा व्यक्ति कैसे प्रभु यीशु की मीरास में हिस्सा पाने की सोच सकता है?" इस प्रकार से अनेकों विश्वासी न्याय और दण्ड के आधीन आ जाते हैं। हमें ऐसे पाप के अपराध-बोध के आधीन आने की आवश्यकता नहीं है। हम लगातार पापों के दागों को धोने के लिए प्रभु यीशु मसीह के बहुमूल्य लोहू का दावा कर सकते है। उसके लोहू में विश्वास रखने के द्वारा हम साफ और पवित्र बने रह सकते हैं। प्रेरितों के काम १५:९ के अनुसार, विश्वास के द्वारा हम लगातार अपनी गन्दगी से साफ किये और धोये जा सकते हैं। हम समय जब हम विचार, शब्द या कार्य के द्वारा अशुद्ध होते हैं, हम कह सकते हैं, "प्रभु यीशु, मैं अशुद्ध हो गया हूँ। कृपया मुझे क्षमा करिये, मुझे अपने खून में धोकर साफ कीजिये।" तब वह हमें साफ करेगा। परन्तु यदि हम उसके लोहू के आधीन न आएँ, तो न्याय और दण्ड के आधीन बने रहेंगे। उसके समीप विश्वास के साथ आइये और वह आपकी नामधराई को लुढ़का देगा। यदि हम अपने आप को नम्र करें और अपनी असफलताओं को मान लें और अपने आप को उसके बहुमूल्य लोहू के आधीन ले आयें, तो प्रभु हमें क्षमा करेगा और हमारे सारे पापों को धो डालेगा।

१३. निर्भरता:

परमेश्वर ने यहोशू को आज्ञा दी कि इस्त्राएल की सन्तान का खतना करवाये। परमेश्वर ने इब्राहीम और उसकी सन्तान से एक वाचा बाँधी और कहा, "मेरे साथ बाँधी हुई वाचा, जो तुझे और तेरे पश्चात तेरे वंश को पालनी पड़ेगी, सो यह है, कि तुम में से एक एक पुरुष का खतना हो" (उत्पत्ति १७:१०)। उसी समय परमेश्वर ने इब्राहीम से अपनी पहली प्रतिज्ञा को दोहराया कि वह उसे अवश्य एक पुत्र देगा और उसे बहुत अधिक बढ़ायेगा और उसे मीरास के रुप में कनान का देश देगा। उस समय वह निन्यानवे वर्ष का था और उसकी पत्नी सारा नवासी वर्ष की थी। मानवीय दृष्टि से देखा जाये तो उन्हें अपने शरीरों से इस आयु में पुत्र प्राप्ति की कोई आशा नहीं थी। परमेश्वर ने इब्राहीम को हर

लड़के का खतना करने की आज्ञा दी, यही दर्शाने के लिये कि उन्हें पुत्र की प्राप्ति स्वयं की सामर्थ या शक्ति से नहीं हुयी, अपितु परमेश्वर के स्वयं के जीवन और फिर से जी उठने की सामर्थ के द्वारा ही वे फलवन्त हुए थे। इसी प्रकार से यहोशू और इस्त्राएल की सन्तान को यह बात ध्यान में रखनी पडी, कि अपनी सामर्थ अथवा चतुराइ के द्वारा नहीं, बल्कि परमेश्वर के आत्मा, सामर्थ और शक्ति के द्वारा वे उनकी मीरास का आनन्द उठा सकते थे।

हम पाते हैं कि जकर्याह ४:६ में यही सन्देश जरुब्बाबेल को दिया गया, "न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोबा का यही वचन है।" यरुशलेम के मन्दिर को फिर से बनाने के विषय में जरुब्बाबेल के मन में बहुत से प्रश्न और सन्देह थे। वह जानता था कि यिर्मयाह की भविष्यद्वाणी के अनुसार इस्त्राएल की सन्तान सत्तर वर्षो तक बाबेल की बन्धुवाई में रहेगी। उसने यरुशलेम की तोड कर गिराई गई दिवारों को तथा आग से जलाये गये फाटकों को देखा जरुब्बाबेल के साथ इस्त्राएल के जो लोग थे वे संख्या में बहुत कम थे तथा उनके पास धन और सहायता की कमी थी। ऐसी परिस्थितियों में परमेश्वर का वचन जरुब्बाबेल के पास पहुँचा, कि परमेश्वर का कार्य न तो मनुष्य के बल से, न मनुष्य की शक्ति के द्वारा किया जाएगा, परन्तु परमेश्वर के आत्मा के द्वारा होगा। हम अपनी सामर्थ के द्वारा प्रभु की कोई सेवा नहीं कर सकते और अपने प्रयासों के द्वारा स्वर्गीय मीरास के अधिकारी नहीं बन सकते। हमें परमेश्वर के आत्मा पर निर्भर रहना अवश्य सीखना चाहिये और अवश्य ही अपने आप को उसके संपूर्ण आधीन लाना चाहिये।

परमेश्वर की अगुवाई की अवहेलना करने और उसकी आडा न मानने के द्वारा हम आत्मिक रुप से अन्धे हो जायेंगे। आज हम पाते हैं कि परमेश्वर की आज्ञा बिलकुल नहीं

मानने अथवा आंशिक रुप से मानने के कारण अनेक लोगों ने स्वर्गीय वस्तुओं के बारे में अपना दर्शन खो दिया है।

उदाहरण स्वरुप, राजा शाऊल ने परमेश्वर की आज्ञा आंशिक रुप में मानी और परिणाम यह हुआ कि वह परमेश्वर के द्वारा अस्वीकार कर दिया गया। दाऊद भी अपनी बडी सेना की गिनती करने की अभिलाषा में गिर पडा और इस प्रकार उसने अपनी शक्ति पर घमण्ड किया (२ शमुएल २४:२, ३)। वह अच्छी तरह जानता था कि उसकी सारी विजय परमेश्वर के द्वारा जीती जाती थी, उसकी स्वयं की सेना की शक्ति के द्वारा नहीं। उसने गोलियत को अपनी शक्ति अथवा चतुराई के द्वारा नहीं पराजित किया। वह गोलियत के विरुद्ध परमेश्वर के नाम से लडा और उसे पराजित किया (१ शमुएल १७:४५, ५०)। फिर भी अपने बुढ़ापे में अपनी सेना की गिनती करने की परीक्षा में वह गिर पड़ा। उसकी सेना के सेनापति योआब ने उसे इस गलती से बचाने का प्रयास किया परन्तु दाऊद का दृढ़ निश्चय प्रबल रहा। इससे यह बात प्रगट हुयी की दाऊद की आँखे अपने लोगों की बड़ी संख्या पर थी और परमेश्वर पर नहीं थी। इसीलिये परमेश्वर ने उसे खलिहान में नम्र किया। इस प्रकार दाऊद को सीखना पडा कि अपना भरोसा केवल प्रभु यहोबा पर रखें।

इस प्रकार की परीक्षा हम सब पर आती है। हम अपनी परीक्षाओं पर जय पाने अथवा परमेश्वर की सेवा करने के लिये अपनी इच्छा-शक्ति, योग्यता अथवा ज्ञान पर भरोसा रखने के प्रलोभन में आ जाते हैं। बहुत से लोग अपने भवनों और सम्पत्ति और कैमेरा, रेडियो आदि चीजों पर भरोसा रखते हैं। वे सोचते हैं, इन चीजों को रखने के कारण उन्हें अधिक फल प्राप्त होगा और वे अच्छे परिणाम देखेंगे।

फलदायी सेवकाई के लिये हमें अपने आप को हर परिस्थिति में प्रभु के ऊपर डालना होगा। यहाँ तक की यदि प्रचारक भी अपनी बीती हुइ आशीषों और सफलताओं पर निर्भर करेंगे, तो वे बहुत फल देखने से अपने आप को वंचित करेंगे। दिन प्रति दिन

आवश्यक है कि हम अपने प्रभु परमेश्वर से विनती करें कि वह हमारे होंठों, जीभों, एवं गलों को छुये और वह अपने लोगों के लिये अपना स्वयं का सन्देश हमें दे। केवल तभी हमारी सेवकाई जीवन और ताजगी से भरपूर होगी। कुछ कुशल गृहिणियाँ बासे और सूखे भोजन में नमक, मिर्च, इमली और अन्य मसाले डालकर और उसे तलकर ऐसा बनाती हैं कि वह ताजा और स्वादिष्ट लगे। कुछ प्रचारक उसी प्रकार से पुराने सन्देशों का उपयोग करते हैं। ऐसा करने से हमें परमेश्वर को आशीष नहीं मिलेगा, और हमारे प्रयासों में फल नहीं आयेंगे। यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम अपने घुटनों पर आकर प्रभु से बिनती करें कि वह हमारा अभिषेक करे और हमें दिन प्रति दिन अपना सन्देश दे। हमें कभी भी अपनी चतुराई, योग्यता अथवा शक्ति पर भरोसा करके सन्देश तैयार नहीं करना चाहिये। क्योंकि ऐसा सन्देश विजयी और उपयोगी जीवन जीने में अगुवाई नहीं करेगा।

यह सब सिखाने के लिये, परमेश्वर ने यहोशू को आज्ञा दी कि इस्त्राएलियों का खतना करें। इस तरह उसने उन्हें याद दिलाया कि केवल यहोबा परमेश्वर को समार्थ पर भरोसा रखने के द्वारा ही वे उन सात बडे देशों को जीत सकेंगे और कनान देश की भूमि पर कब्जा कर सकेंगे। अपनी बडी सेना, अपनी चतुराई, अपनी योजना एवं अपने हथियारों पर निर्भर रहकर वे कभी भी इस विजय को प्राप्त नहीं कर सकेंगे।

१४. बालक:

यहोशू के ५ वें अध्याय के १२ वें पद में हम पढ़ते हैं कि मन्ना गिरना बन्द हो गया। जब तक इस्त्राएल की सन्तान जंगल में थी परमेश्वर उन्हें पतिदिन मन्ना दिया करता था। उनके कनान में आते ही मन्ना गिरना बन्द हो गया। अब उन्हें अपने भोजन के लिये कडा परिश्रम करना पडा। आत्मिक परिपक्वता प्राप्त करने के लिये हमें परमेश्वर के चपल सहकर्मी बनना चाहिये। हमारे आत्मिक जीवन के प्रारम्भ के कुछ समय तक

परमेश्वर विशेष तीर पर हमारी देखरेख और निगरानी करेगा। पर जैसे जैसे हम आत्मिक परिपक्कता में बढते जाते हैं परमेश्वर हमसे यह अपेक्षा रखता है कि हम और अधिक कठिन आत्मिक फल लाने के लिये अपने विश्वास को अधिक प्रमाण में काम में लायें और सहायता के लिये परमेश्वर की दोहाई दें। वह चाहता हैं, कि हम भलीभाँति उसकी इच्छा को जाने तथा अपने उत्तरदायित्व को निभायें। वह चाहता है कि हम और अधिक परिपक्त विश्वास के साथ परमेश्वर की सहायता से उन सब परीक्षाओं और कठिनाइयों का सामना करें जो कि सभी के लिये सामान्य हैं। इस तरह से परमेश्वर चाहता है, कि हम विश्वास के द्वारा, उसकी विजय का दावा करना सीखें।

कभी-कभी पौलुस प्रेरित अपने पीछे चलने वालों को आत्मिक बातों में सहायता करने के लिये परमेश्वर के वचन के रहस्य समझाया करता था। फिर जब वह दूर था, तब उसने उन्हें लिखा कि डरते और काँपते हुये व अपने अपने उद्धार के कार्य को पूरा करते जायें (फिलिप्पियों २:१२)। इसी प्रकार से थोडे समय के लिये परमेश्वर हमें भोजन देने शिक्षा देने और अगुवाई करने के लिये चरवाहे देगा। उसके बाद हमें स्वयं कार्य करना सीखना होगा। बाइबल को अधिक गहराई के साथ समझने, उस पर ध्यानपूर्वक विचार करने और उसके द्वारा परमेश्वर की आवाज सुनने के योग्य होने के लिये, हमें उसे अच्छी तरह से पढ़ना सीखना चाहिये। कुछ विश्वासी बहुत लम्बे समय तक बालक ही बने रहते हैं। वे चाहते हैं, कि परमेश्वर के अन्य भक्त उन्हें दूध से तृत्प करें। वे न आगे बढ़ते हैं, न उनमें आगे बढ़ने की योग्यता आती है, जिस योग्यता के बिना वे उस आत्मिक अन्न को जो कि, परमेश्वर के वचन में मिलना है, नहीं पचा सकते (इब्रानियों ५:१२-१४)। काश की प्रभु अधिक उसकी आवाज सुनने और उसकी सिद्ध इच्छा जानने के लिये हमारी सहायता करे जिससे की आगे से हम आत्मिक वृद्धि के मामले में बालक ही न बने रहें।

१५. अदृश्य शक्ति:

इस्त्राएल की सन्तान अब यरीहो के विरुद्ध चढ़ आये थे। उस समय यहोबा की सेना का प्रधान यहोशू के सामने प्रगट हुआ (यहोशू ५:१३-१५)। परमेश्वर यहोशू को निश्चय दिला रहा था कि वह स्वयं अपने लोगों की तरफ से लड़ेगा। उसके पश्चात यहोशू को कई और युद्ध लड़ने पड़े, परन्तु वह प्रधान फिर कभी प्रगट नहीं हुआ, न कभी उसका नामोल्लेख किया गया। उसके पश्चात परमेश्वर उनकी और से अदृश्य रुप में लड़ता रहा (यहोशू २१:४३-४५)। उसी यहोबा ने हमारे साथ रहने की प्रतिज्ञा की हे। यद्यपि वह हमारी नंगी आँखों से नहीं दिखता, तौभी वह हमारे साथ रहेगा और हमारे युद्ध स्वयं लड़ेगा, बशर्ते कि हम उसे अपने जीवन का पूरा भार, योजनाएँ और परिस्थितियाँ सौंप दे।

उस प्रधान ने यहोशू से कहा कि वह अपने जूते पैर से उतारा दे। इसका तात्पर्य था कि यहोशू को हरेक अशुद्धता से मुक्त होना था। जब हम विभिन्न स्थानों में चलते फिरते हैं तो अपने आपको कहीं न कहीं या किसी न किसी प्रकार से अशुद्ध होने से नहीं बचा सकते हैं। जब तक हम इस दुष्ट दुनिया में है, हम हमेशा उन चीजों के द्वारा भ्रष्ट किये जाने के खतरे में है, जिन्हें हम देखते अथवा सुनते हैं। कोई विचार, शब्द अथवा कार्य अशुद्धता ले आता है। अवश्य है कि हम शुद्ध होने के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह के बहुमूल्य लोहू का दावा करें, तब यहोबा की सेना का प्रधान पूरे समय हमारे साथ रहेगा। इस प्रकार से लोहू पर सरल विश्वास रखने के द्वारा हम अपने आप को अशुद्धता से बचाये रखकर, परमेश्वर की अदृश्य परन्तु वास्तविक उपस्थिति का आनन्द ले सकेंगे और उसमें (परमेश्वर में) अपने अधिकारों को अपना सकेंगे।

१६. अवरोधों पर विजय:

यरीहों की दीवारें बड़ी मजबूत और थीं और उसके समस्त फाटक इस्त्राएल को सन्तान के भय के कारण दृढ़तापूर्वक बन्द कर दिये गए थे। उसके अन्द शक्तिशाली एवं

बहादुर पुरुष थे। इतनी ऊँची दीवारों को देखकर ही कोई भी भयभीत हो जाता! परन्तु इस्त्राएलियों के साथ यह बात नहीं थी। यहोबा ने उनसे प्रतिज्ञा की थी कि वह यरीहो नगर और उसके समस्त रहनेवालों को पहिले से ही उनके हाथों में दे चुका था (यहोशू ६:२)। इसलिये जब वे यरीहों की सीमा पर पहुँच तो वे पहिले से ही विश्वास से भरे हुये थे कि विजय उन्हीं की थी। यरीहो का राजा और उसके शूरवीर ये शैतान और उसके दूतों की ओर संकेत करते हैं। हमें दुष्टता की आत्मिक सेनाओं के विरुद्ध लड़ना है (इफिसियों ६:१२)। परन्तु हमारे प्रभु यीशु मसीह ने शैतान को पहिले ही पराजित कर दिया है, और उसे शर्मिन्दा किया है (कुलुस्सियों २:१५)। उसने वह विजय हमारे पक्ष में प्राप्त की है। इसलिये हम भी शैतान के हर आक्रमण के समय प्रभु की विजय का दावा विश्वास के द्वारा कर सकते हैं।

यदि परमेश्वर चाहता तो वह अपने स्वर्गदूतों के द्वारा यरीहों को नष्ट कर सकता था। परन्तु वह इस्त्राएलियों को अपने सहकर्मियों के रुप में चाहता था। परन्तु वह इस्त्राएलियों को अपने सहकर्मियों के रुप में चाहता था। उसके सहकर्मी बनने के लिये हमें दृढ़ विश्वास की आवश्यकता है। इसी कारण इस्त्राएलियों को परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करना पड़ा और बिना प्रश्न किये अथवा बिना शंका किये उसकी आज्ञा माननी पड़ी। यदि यहोबा चाहता तो इस्त्राएलियों के केवल एक ही बार यरीहो का चक्कर लगाने से नग की दीवारें गिर गई होतीं। परन्तु हम देखते हैं, कि उन्हें तेरह बार शहर का चक्कर लगाना पड़ा। हर बार जब उन्होंने चक्कर लगाया उनका विश्वास अधिक दृढ़ होता गया। उन्हें निर्देश दिया गया था कि वे उन लोगों की ओर बिल्कुल भी ध्यान न दें जो दीवारों के ऊपर चढ़कर उनको देख रहे थे। शायद ये लोग इस्त्राएलियों को देखकर हँस रहे थे या उनकी हँसी उड़ा रहे थे, और दूसरी तरफ इस्त्राएल की सन्तान यहोबा की ओर की विजय में नरसिंगे फूकने के द्वारा आनन्द मना रहे थे।

उनकी आँखे नगर की ओर से तथा उसके निवासियों की ओर से हटा दी गई थीं और वे केवल यहोबा की ओर लगी हुई थीं। केवल यहोबा के वचन पर दृढ़, चपल विश्वास के द्वारा तथा परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने के कारण वे प्रतिज्ञा किये गये देश में प्रवेश कर सके और उसे अपने अधिकार में ले सके।

१७. शुद्धिकरण:

इस्त्राएल की सन्तान को छ:दिन तक यरीहो नगर का प्रतिदिन एक चक्कर लगाना पड़ा और सातवें दिन सात चक्कर लगाने पड़े। यह उन अग्नि परीक्षाओं की ओर संकेत करता है जिन्हें एक विश्वासी के जीवन में इसलिये आने की अनुमति दी जाती है, ताकि उसे दृढ़ विश्वास दिया जाये (१ पतरस १:६-७)। सोना जब सात बार आग में ताया जाता है तो वह शुद्ध हो जाता है। हमें अपनी स्वर्गीय मीरास का सम्पूर्ण भाग देने के लिये हमारा परमेश्वर हमें अनेकों दु:खद परिस्थितियों से होकर ले चलेगा।

१८. साझेदारी:

यरीहो एक श्रापित नगर था। वहाँ के निवासियों के घृणित पापों के कारण वह नगर परमेश्वर के क्रोध के आधीन था (लैब्य-व्यवस्था१८:६-२५)।

इस्त्राएल के लोगों को परमेश्वर के साथ कार्य करने और उस दुष्ट नगर का न्याय करने का सम्मान मिला। विश्वासी होने के नाते हम भी परमेश्वर के सहकर्मी कहलाते हैं (१ कुरिन्थियों ३:९, तथा २ कुरिन्थियों ६:१)। जगत तथा स्वर्गदूतो का न्याय करना हमारा विशेषाधिकार हे (१ कुरिन्थियों ६:२-३)। जब हम प्रभु यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत मुक्तिदाता के रुप में ग्रहण करते हैं तब हम उसके साथ सात गुनी साझेदारी में लाये जाते हैं:-

१. पवित्र आत्मा के सहभागी (इब्रानियों ६:४)।

२. ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी (२ पतरस १:४)।

३. परमेश्वर की पवित्रता के सहभागी (इब्रानियों १२:१०)।

४. परमेश्वर की स्वर्गीय बुलाहट के सहभागी (इब्रानियों ३:१)।

५. ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास के सहभागी (कुलुस्सियों १:१२)।

६. परमेश्वर की महिमा के भागीदार (१ पतरस ५:१)।

७. प्रभु यीशु मसीह के भागीदार (इब्रानियों ३:१४)।

इन सभी अनुभवों के पूर्ण आनन्द में आने के द्वारा हम परमेश्वर के सच्चे सहकर्मी बन जाते हैं; और सारी सृष्टि से सृजनहार एवं अपने प्रेमी स्वर्गीय पिता की महिमित साझेदारी में प्रवेश करते हैं।

१९. रुकावटें:

यहोशू के सातवें अध्याय में इस्त्राएलियों की ऐ के सामने हुयी पराजय क विषय में हम पढ़ते हैं। एक व्यक्ति के जीवन में पाप के कारण यह हुआ। हम प्रभु के कार्य में एक देह के रुप में लगे हुये हैं। प्रभु यीशु मसीह की मण्डली के रुप में हम शैतान के विरुद्ध लड़ रहें हैं। किसी भी एक व्यक्ति की कमजोरी या असफलता सम्पूण्र मण्डली पर विपरीत एवं हानिकारक प्रभाव डालेगी।

जब यहोशू और अगुवे प्रार्थना करने में लगे थे, तब आकान का पाप प्रगट किया गया। जिस प्रकार परमेश्वर ने आज्ञा दी उससे उसी प्रकार का व्यवहार किया गया और उसके बाद तुरन्त ही विजय की प्रतिज्ञा पूर्ण होनी प्रारम्भ हो गई। इसके प्रकाश में हमें भी अपने हृदयों को खोजना चाहिये और सारी बातें परमेश्वर और मनुष्यों के सामने ठीक कर लेना चाहिये जिससे कि हम परमेश्वर के काम में कोई रुकावअ न लायें।

२०. महान मूल्य:

अपने पाप के बदले आकान को बहुत ही बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। इससे हमें याद आना चाहिये कि समस्त मनुष्य जाति के सभी पापों के दण्ड को सहने के लिये यीशु मसीह को कितनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। हमें अपने प्रिय उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह का कितना आभारी होना चाहिये।

यहोबा ने ऐ के विरुद्ध संपूर्ण विजय की प्रतिज्ञा की, अर्थात् ऐ के राजा, उसकी प्रजा, उसके नगर और देश पर भी संपूर्ण विजय (यहोशू ८:१)। यहोबा की आज्ञाओं का पूर्णत: पालन करने के द्वारा वे उस विजय का आनन्द ले सके। प्रभु यीशु मसीह ने शैतान और उसकी दुष्ट शक्तियों पर पूर्ण विजय प्राप्त की है (कुलुस्सियों २:१५)। जब हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, तब हम भी दिन प्रति दिन उसकी विजय का आनन्द ले सकते हैं।

यहोशू की पुस्तक पढ़ते समय आप उसमें बहुत-सी सरल और अत्यन्त महत्वपूर्ण सच्चाइयों को देखेंगे, जिन्हें हम विश्वास के द्वारा अपना सकते हैं, और इस प्रकार उसकी मीरास का पूरा आनन्द उठा सकते हैं। काश! की प्रभु परमेश्वर इस अनुभव को प्राप्त करने में हमारी सहायता करे।

जब मीरास भावी उत्तराधिकारी को सौंपी जाती हैं, तब स्वाभाविक तौर पर उत्तराधिकारी उन वस्तुओं की सूची देखने में रुचि लने लगता है, जिन्हें वह मोरास के रुप में प्राप्त करने जा रहा है। परमेश्वर की ओर से जो मीरास हमें मिलती हैं, उसमें बहुत-सी आश्चर्यजनक आशीषें हैं। इन अद्भुत आशीषों में से एक है परमेश्वर का आनन्द।

यहोबा का आनन्द (नहेमायाह ८:१०)

नहेमायाह की पुस्तक ८ वां अध्याय १० वें पद के अन्तिम भाग में हम पढ़ते हैं, "यहोबा का आनन्द तुम्हारा दृढ़ गढ़ है।" आइये, हम यह समझने की कोशिश करें कि यहोबा का आनन्द वास्तव में क्या है, और यह भी देखे कि क्या हम यहोबा के इस आनन्द को उसके साथ सम्मिलित स्वाभावित सामर्थ के साथ प्राप्त कर सकते हैं?

प्रभु यीशु मसीह के बहुमूल्य लोहू से धुलने के द्वारा जब एक पापी अपने पापों की क्षमा प्राप्त करता है, तब उसे एक विशेष प्रकार के स्वर्गीय आनन्द की प्राप्ति होती है। यथार्थ में यही यहोबा का आनन्द है, जिसके विषय में हम बात कर रहे हैं।

जब कोई अपना जीवन प्रभु यीशु मसीह की महिमा और सन्तुष्टि के लिये जीता है, तब यह आनन्द बढ़ता जाता है। जब हम इस आनन्द को एक बार प्राप्त कर लेते हैं, तब दिन प्रतिदिन और अधिक बढ़ती हुई मात्र में अनुभव कर सकते हैं। नहेमायाह ८:१० में लिखा हैं, "और जिनके लिये कुछ तैयार नहीं हुआ उनके पास बैना भेजो।" दूसरे शब्दों में, स्वर्गीय आनन्द, जिसका अनुभव एक उद्धारप्राप्त व्यक्ति करता है, दूसरे लोगों को दिया जा सकता है, जो दु:खित हैं तथा जो इस आनन्द से वंचित है। इसका तात्पर्य है कि स्वर्गीय आनन्द जो कि एक व्यक्ति को प्राप्त हुआ है, उसे दूसरों के साथ बाँटा जा सकता है, अर्थात ऐसे लोगों के साथ जो दु:ख में है, और जो इस आनन्द के बिना हैं।

यहोबा का यह आनन्द हर पाप और परीक्षा पर जय भी देता है। ऊपर दिये हुये वचन में हम देखते हैं कि यह आनन्द स्वर्गीय है।

आइये, हम इस आनन्द के विभिन्न गुणों पर विचार करें और इस पर भी ध्यान करें कि किस प्रकार सभी लोग यह महान आनन्द प्राप्त कर सकते एवं उसका अनुभव कर सकते हैं।

१. असीम आनन्दः

सर्वप्रथम, यह एक बहुत बड़ा आनन्द है और यह हमें बहुत बड़ी मात्रा में दिया जाता है। "तब स्वर्गदूत ने उन से कहा मत डो; क्योंकि देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूँ जो सब लोगों के लिये होगा। कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है" (लूका २:१०-११)। यह सन्देश हमारे प्रभु यीशु मसीह के जन्म के समय स्वर्गदूतों द्वारा जगत में लाया गया। इसकी घोषणा बड़ी सामर्थ और अधिकार के साथ की गई, "मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूँ।" अपना बड़ा आनन्द हमें देने के लिये स्वयं प्रभु यीशु मसीह इस जगत में आये। यह आनन्द सीधे स्वर्ग से आया है और यह स्वर्गीय है।

२. विपुल आनन्दः

दूसरा, यह आनन्द स्वर्ग से ईश्वरीय अधिकार के अन्तर्गत सम्पूर्ण जाति के पास भेजा गया है। यह आनन्द "सब लोगों" के लिये है। यह केवल एक समूह के लोगों के लिये सीमित नहीं है। वचन स्पष्ट कहता है कि यह, "सब लोगों के लिये होगा।" इसलिये यदि कोई व्यक्ति यह समझता है, कि यह आनन्द केवल उसके लिये ही है, तो उसके इस गलत विचार धारणा के परिणाम स्वरुप उसे इस आनन्द से वंचित होना पड़ेगा। बाइबल में परमेश्वर जो कुछ कहता है वह निश्चित रुप से सत्य है। उसे बदला नहीं जा सकता। "सब लोगों" का अर्थ है सब देशों के लोग, सब भाषाओं के, सब आयु के, सब स्तर के, धनाढ्य और गरीब, पढ़े लिखे और अनपढ़, सभ्य और असभ्य, ऊँचे और नीचे, तथा गोरे और काले, सब प्रकार के लोग। यह आनन्द सभों के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है, और सभों के द्वारा इसका आनन्द लिया जा सकता है।

लगभग दो हजार वर्ष जब बैतलहम में प्रभु यीशु मसीह पैदा हुए थे, तब जगत में आत्मिक अन्धकार छाया हुआ था। वह समय अशान्ति और उपद्रव का था। वह सयम यहूदियों की बन्धुवाई का समय था, क्योंकि वे रोमी राज्य के आधीन थे। सम्पूर्ण देश मूर्तिपूजा से भर गया था। वहाँ न कोई भविष्यद्वक्ता था न उपासना का कोई स्थान था, जहाँ से परमेश्वर के लोग अर्थात यहूदी लोग परमेश्वर की आवाज सुन सकते। ऐसे समय में परमेश्वर की शान्ति और आनन्द का सन्देश सब लोगों के लिये लाया गया। "सब लोगों में" आप भी सम्मिलित हैं। इसलिये अपने आपको यह समझकर अपवाद न बनाइये कि यह आप से सम्बन्धित नहीं है।

३. **पराजित न होने वाला आनन्द:**

तीसरा, यह आनन्द हर समय अनुभव किया जा सकता है। यह कभी कभी का या थोड़े समय का आनन्द नहीं है। बीमारियों, दु:खों, सतावों, दर्द, कंगाली, एकाकीपन और प्रिय लोगों से बिछुड़ने जैसी परिस्थितियों के कारण हमारा जीवन हमेशा परिवर्तनशील है। परन्तु यह आनन्द बहुत दु:खदायी स्थिति में भी अनुभव किया जा सकता है, क्योंकि यह यहोबा का आनन्द हे यह वह आनन्द है जो निरन्तर बना रहता है और जो किसी भी परिस्थिति के द्वारा हटाया नहीं जा सकता। देखिये, १ थिस्सलूनिका ५:१६ में बाइबल इस आनन्द के विषय में क्या कहती हैं, "सदा आनन्दित रहो।" आप अपने पूरे जीवन काल तक किसी भी परिस्थिति में आनन्दित रह सकते हैं। परमेश्वर का वचन हमें चेतावनी देता है, कि हमें हर प्रकार की परीक्षाओं और यातनाओं से होकर जाना पड़ेगा। परन्तु ऐसी सभी विपत्तियों के बीच में यह आनन्द सदा बना रहेगा, क्योंकि यह यहोबा का आनन्द है।

४. भली-भाँति सुरक्षित आनन्दः

चौथा, यह आनन्द हम से कोई नहीं छीना सकता, न मित्र, न शत्रु, न रिश्तेदार और न अजनबी। "और तुम्हारा आनन्द कोई तुम से छीन न लेगा" (यूहन्ना १६:२२)। शत्रु हमसे हमारा सांसारिक आनन्द छीन सकते है, परन्तु वे यह आनन्द जो स्वर्ग से है, नहीं छीन सकते। कुछ लोग ईर्ष्यावश या शत्रुतावश झूठे दोष लगाकर हमसे हमारा सांसारिक आनन्द छीनने का प्रयास करते हैं। परन्तु यहोबा का यह आनन्द "कोई हमसे छीन न लेगा।" क्या ऐसे स्वभाव का आनन्द आप के पास है? या फिर, किसी ने आपके आनन्द को छीनने में सफलता पाई है? यदि आपका आनन्द वास्तव में आत्मिक एवं स्वर्गीय है तो कोई उसे चुरा नहीं सकता।

५. अप्रभावित आनन्दः

पाँचवा, यहोबा का आनन्द अनोखा है, इसका आनन्द सब कुछ खो देने पर भी उठाया जा सकता है। "चाहे अंजीर के वृक्षों में फूल न लगें, और न दाखलताओं में फल लगें, जलपाई के वृक्ष में केवल धोखा पाया जाए और खेतों में अन्न न उपजे, भेड़शालाओं में भेड़-बकरियाँ न रहें, और न थानों में गाय बैल हो, तौभी मैं यहोबा के कारण आनन्दित और मगन रहूँगा, और अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर के द्वारा अति प्रसन्न रहूँगा" (हबक्कूक ३:१७-१८)। चाहे आप अपनी घड़ी या कलम, अपना का या पद अथवा सम्पत्ति भी क्यों न खो बैठें, यह आनन्द आपको नहीं छोड़ेगा। मैंने स्वयं देखा कि १९३५ में क्वेटा शहर में भूइडोल के कारण ५८००० लोग कैसे १८ सेकण्द ही में मर गये। कुछ विश्वासी आश्चर्यजनक रुप से मौत से बच गये यद्यपि उनका सब कुछ उन्होंने खो दिया। उस समय मैंने दो सप्ताह तक बचाव कार्य किया। जो लोक विनाश के बाद बचे रहे, वे दिन भर रोते रहते थे। परन्तु विश्वासी, यद्यपि उन्होंने सब कुछ खो दिया था, गीत गाते और बाइबल अध्ययन सभाओं का आनन्द उठाते रहे। उन्होंने जो खो दिया था उसकी उनको तनिक भी

चिन्ता नहीं थी। उनका आनन्द सच्चा था। उनका आनन्द धन, सम्पत्ति, पद अथवा नौकरी पर आधारित नहीं था। जिनके पास ऐसा आनन्द नहीं होता वे लोग हर छोटी-मोटी क्षति पर अत्यन्त दुखी हो जाते हैं, क्योंकि उनका आनन्द किसी संसारिक वस्तु पर आधारित रहता है।

६. न बदलने वाला आनन्द:

छठवा, यहाँ तक की दु:ख भी इस आनन्द को नहीं बदल सकता। "शोक करने वाले के समान हैं, परन्तु सर्वदा आनन्द करते है; कंगालों के ऐसे हैं, परन्तु बहुतों को धनवान बना देते हैं, ऐसे है जैसे हमारे पास कुछ नहीं तौभी सब कुछ रखते हैं" (२ कुरिन्थियों ६:१०)। आप आश्चर्य कर सकते हैं, कि दु:ख में आनन्द केसे हो सकता है। परन्तु परमेश्वर ही है, जो ऐसा आनन्द देता है। उदाहरण के लिये देखिये, समुद्र की सतह पर विनाशकारी आँधी और तूफान आये, पर प्रभु यीशु उसे पूर्णत: शान्त कर सके (मत्ती ८:२६)। इसी प्रकार से बड़े दु:ख के समय में, किसी प्रिय जन की मृत्यु में या यातना अथवा परीक्षा में परमेश्वर के लोग अपने हृदयों में महान शान्ति का आनन्द ले सकते हैं।

दु:ख के समय हमें यह कहते हुए अवश्य अपने घुटनों पर आना चाहिए कि "परमेश्वर गलती कर ही नहीं सकता। उसका प्रेम कभी नहीं बदलता। उसका वचन कमी नहीं बदलता। वह प्रधान है, श्रेष्ठ है।" इस प्रकार से हम देखेंगे कि एक सच्चा विश्वासी गहन दु:ख के समय भी कभी अपना आनन्द नहीं खोता।

७. अकथ्य आनन्द:

सातवाँ, १ पतरस १:८ में पतरस प्रेरित ऐसे आनन्द के विषय में कहता है जो अकथ्य एवं महिमा से भरपूर है। यह आनन्द शब्दों अथवा गीतों द्वारा ठीक प्रगट नहीं किया जा सकता। संसार की कोई भी भाषा इस आनन्द को प्रगट नहीं किया जा सकता। यद्यपि

हम अधिक कुछ न बोले, फिर भी हमारे यें एक ऐसा अनोखा आनन्द रहता है, जो हमें यह अनुभव कराता है, कि हम स्वर्ग में है। अनुग्रह का परमेश्वर हमें यह आनन्द एक वरदान के रुप में देता है। यह आश्चर्यजनक एवं अकथ्य है, तथा यह हमें कभी नहीं छोड़ता।

८. अलौकिक आनन्द:

आठवाँ, यह आनन्द खाने और पीने जैसे संसारिक बातों पर आधारित नहीं रहता। यह एक आत्मिक आनन्द है जो हमारे जीवनों में पवित्र आत्मा के कार्य करने के द्वारा हममें आता है। "क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना पीना नही; परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनन्द है, जो पवित्र आत्मा से होता है" (रोमियों १४:१७, १८)। कुछ लोगों का आनन्द अच्छे भोजन पर आधारित रहता है। जिस किसी दिन उन्हें अच्छा भोज मिले वह उनके लिये एक बड़ा दिन होगा। वे अच्छे भोजन के लिये लालायित रहते हैं। उनका आनन्द समयानुसार एवं अस्थायी है। परन्तु यहोबा का आनन्द हर समय अनुभव किया जा सकता है, सूखे की स्थिति, अकाल या भूखमरी के समय में भी। मैं अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि यद्यपि मुझे अनेक दिनों तक भूखे रहना पड़ा, परन्तु न कभी मेरे हृदय में कुड़कुड़ाहट आयी, न असंतोष। मेरे अन्दर एक अनोखा आनन्द था, जिस पर संसारिक बातों का कोई प्रभाव नहीं हो सकता।

अब आइये, हम अपने आन्तरिक जीवन की खोजबीन करें कि क्या हमने सचमुच उय स्वर्गीय आनन्द को पाया है। हमें अपने आप को धोखा नहीं देना चाहिए। जब कोई कुछ खरीदने बाजार जाता है तो सामान्यत: उन वस्तुओं को जिन्हें वह लेना चाहता है अच्छी तरह से जाँचता है। फिर भी बहुत से लोग कलाई की घड़ी या अन्य कीमती वस्तुएँ लेते समय धोखा खा जाते हैं। ऊपर से तो वे अच्छी और आकर्षित दिखती हैं, परन्तु वास्तव में वे उतनी कीमती नहीं होतीं। उनके विषय में जिन्हें जानकारी होती है वे तरह-तरह के परीक्षण करते हैं, फिर भी वे निश्चित तौर पर सही चुनाव का दावा नहीं कर सकते। २

कुरिन्थियों ११:१३ में हम पढ़ते हैं कि शैतान हमें किस प्रकार से धोखा दे सकता है। वह हमें ऐसे महसूस करा सकता है जिसे कुछ हममें यहोबा का आनन्द है, जबकि वह आनन्द वास्तव में हम में नहीं होता। शैतान एक नकल को वास्तविक का रुप दे सकता है।

यह हमें एक रेल के डिब्बें में एक चोर की याद दिलाता है। एक समय एक आदमी बहुमूल्य वस्तुओं से भरी हुई एक पेटी लेकर रेल से यात्रा कर रहा था। उसने सर्तकता पूर्वक ताला लगाई गई वह पेटी ऊपर की बर्थ पर रख दी, और सो गया। मध्य रात्रि में उसने हमारी नींद में बाध पहुँचाते हुए अपनी पेटी की जाँच पड़ताल की। जब उसने यह पाया कि उसकी पेटी भारी है, तो वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि किसी ने उसमें से चोरी नहीं की है, और वह फिर से सो गया। यात्रा की समाप्ति पर उसने अपनी पेटी खोली और यह देख कर की उसमें केवल पत्थर भरे हैं उसे बड़ा धक्का लगा। चोर ने बड़ी चालाकी के साथ बहुमूल्य वस्तुओं के स्थान पर पत्थर रख दिये थे, जिससे की पेटी भारी ही लगी।

उस चोर की ही नाई शैतान हमें धोखा देता है। भला और सुरक्षित तो यह है कि हम अपने आप को परमेश्वर के वचन के प्रकाश में जाँचे, और इन बात का निश्चय कर लें कि जो आनन्द हम में है, वह वास्तव में यहोबा का आनन्द है। निश्चित होने के लिये हमें इस आनन्द को अनेक परीक्षणों से जाँचना चाहिए। आइये, अब हम उन परीक्षणों को देखें-

१. स्वर्गीय उगमस्थान:

पहली जाँच इस तथ्य पर आधारित है कि यहोबा का आनन्द स्वर्ग में प्रारम्भ होता है। लूका १५:१० में हम देख सकते हैं, कि यह आनन्द पृथ्वी पर नहीं स्वर्ग में प्रारम्भ होता है। परमेश्वर के वचन के द्वारा पवित्र आत्मा पक्का अपराध बोध और पश्चाताप मनुष्य के हृदय में लाता है। जब वह सचमुच में उसके पापों से पश्चाताप करता है, यह विश्वास करता है कि प्रभु यीशु मसीह ने उसके बदले जान दी, तब स्वर्ग में स्वर्गदूतों के बी आनन्द होता है। जब एक पापी मन फिराता है, एकदम से परमेश्वर सब स्वर्गदूतों को

बुलाता है, जो स्वर्गीय वाद्यों के साथ गीत गाते हैं। वही स्वर्गीय आनन्द इस पश्चातापी एवं उद्धार पाये हुए पापी के अन्दर प्रवेश कर जाता है। इसलिए यह स्वर्ग से आया हुआ आनन्द है। यदि यह उपदेशक के पास से आया हुआ सांसारिक आनन्द होता, तो वह बहुत जल्दी मुर्झा जाता। कुछ लोग किसी दिन किसी सभा में हाथ उठा सकते हैं, और कह सकते हैं कि वे नया जीवन-प्राप्त लोग हैं। दूसरे दिन किसी छोटी एवं महत्वहीन बात को लेकर वे ठोकर खा जायेंगे और संगति से अलग हो जायेंगे। परन्तु एक व्यक्ति में यह आनन्द जब स्वर्ग से आता तो वह कभी मुर्झा नहीं सकता।

इसीलिये यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने प्रभु यीशु मसीह के आगमन की सूचना देनेवाले के रुप में, मन फिराव के विषय में प्रचार किया और कहा, कि "मन फिराव के योग्य फल लाओ" (मत्ती ३:८)। प्रभु यीशु मसीह ने भी यह कहते हुए प्रचार किया कि "मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है" (मत्ती ४:१७)। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला और प्रभु यीशु मसीह, दोनों ने पवित्र आत्मा से भरकर प्रचार किया। यदि लोग मन फिराते हैं, तो उनका यह पश्चाताप हृदय से होना चाहिये, ओंठों से नहीं। यह निश्चित करना चाहिये कि यह किसी भय के कारण, या लोग हमें क्या कहेंगे इस कारण या अपना अच्छा नाम बनाये रखने के लिये तो नहीं है। कुछ लोगों के लिये पश्चाताप एक बहुत ही अनिश्चित विचार होता है। वे बडे हल्के रुप से कहते हैं "हे परमेश्वर यदि मैंने ऐसा किया है, या मैंने वैसा किया है, तो कृपया मुझे क्षमा करे"। उनमें वास्तविक अपराध का स्वीकार नहीं होता तथा उनके पापों के कारण हुई दु:खद स्थिति के लिये कोई दु:ख नहीं होता।

अय्यूब की स्थिति में, परमेश्वर को उससे यह कहने की आवश्यकता नहीं हुई, "तुमने यह अथवा वह काम गलत किया है।" उसने परमेश्वर का दर्शन पाया। उसने परमेश्वर की सुन्दरता, महिमा और महान शक्ति का दर्शन पाया, जो उसे पहले कभी नहीं मिला था। इस दर्शन ने उसे ऐसा कायल किया कि परमेश्वर की उपस्थिति में वह अपने

आप से घृणा करने लगा, क्योंकि उसने इन दो स्थितियों में बड़ा ही विरोधाभास देखा: एक परमेश्वर की पवित्रता और दूसरी उसकी स्वयं की अयोग्यता। यह उसके लिये अति दु:खदायी था।

लूका ५:८ में हम पढ़ते है कि शमौन पतरस प्रभु यीशु के पैरों पर यह कहते हुए गिर पड़ा, "हे प्रभु मेरे पास से जा, क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूँ।" शमौन के पापों को दिखाने की अथवा उसे डाँटने की, हमारे प्रभु को आवश्यकता नहीं पड़ी। परन्तु पतरस ने जब प्रभु यीशु मसीह की महानता और महान शक्ति को देखा तो वह स्वयं ही अपराध बोध की भावना से भर गया, फिर लूका १९:८ में हम देखते हैं, कि जक्कई ने कैसे निष्कपटतापूर्वक पश्चाताप किया। जक्कई अपने कर्त्तव्य पालन में कितना भ्रष्ट है, यह उसे बताने की हमारे प्रभु को कभी भी आवश्यकता नहीं हुई कि उसे प्रभु की वास्तविक उपस्थिति ही उसमें सच्चा पश्चाताप और हृदय-परिवर्तन ले आई और उसने कहा, "हे प्रभु, देख, मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को दे देता हूँ, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूँ।" इस प्रकार हम देखते हैं, कि कैसे सच्चे पश्चाताप के द्वारा स्वर्गीय आनन्द हममें आता है। यह आनन्द, जो कोई भी पश्चाताप करता है, उसके हृदय में स्वर्ग से उण्डेला जाता है।

२. मेम्ने की जीवन की पुस्तक:

यह निश्चित करने के लिय की हमारा आनन्द वास्तव में यहोबा की ओर से है, उसका दूसरा परीक्षण इस तयि पर निर्भर है, कि हमारे नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे हों।

लूका १० में हम पढ़ते हैं, प्रभु यीशु मसीह ने दो दो करके ७० चेलों को सुसमाचार सुनाने और बिमारों को चंगा करने के लिये भेजा। अपनी सेवकाई पूर्ण करने के

पश्चात वे बड़े आनन्द के साथ वापस आये। उनसे हमारे प्रभु यीशु मसीह ने कहा, "आश्चर्य-कर्मों के कारण मगन न हो, क्योंकि वे तुम्हें सच्ची खुशी नहीं देते।"

पृथ्वी पर अपनी साढ़े तीन वर्ष की सेवकाई के दौरान प्रभु यीशु ने अनेकों आश्चर्यकर्म किये। कुछ लोग आश्चर्य कर्मों को देखकर इतने पुलकित हो जाते थे। परन्तु बाद में ये ही लोग चिल्लाये, "उसे क्रूस पर चढ़ाओ, उसे क्रूस पर चढ़ाओ।" जो आनन्द उन लोगों ने पाया था वह केवल अस्थायी और छिछला था। एक शराबी इसी प्रकार के आनन्द का अनुभव करता है; शराब पीने के पश्चात् वह अपने आप को एक राजा समझता है, परन्तु जब नशा उससे दूर हो जाता है, तब एक पागल का-सा व्यवहार करने के कारण वह शर्मिन्दित होता है। इसीलिये हमारे प्रभु यीशु ने चेलों को समझाया, "इससे आनन्दित मत हो, कि आत्मा तुम्हारे वश में है, परन्तु इससे आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे है" (लूका १०:२०)। जब तक आप इस पृथ्वी पर हैं, इस बात का निश्चय कर लीजिये की आप स्वर्ग में ग्रहण कर लिये गये है। स्वर्ग में कोई भी जन अजनबी जैसा अनुभव नहीं करेगा। जान पहचान के लिये केवल पृथ्वी पर ही लोग एक दूसरे से पूछताछ करने लगते है। पर स्वर्ग मे हम आनन्दपूर्वक स्वीकार किये जायेंगे और हर एक को पहिले से ही जानेंगे, क्योंकि हम एक ही घराने के सदस्य हैं, अर्थात् परमेश्वर के घराने के।

३. परमेश्वर की उपस्थिति का बोध:

हमारा आनन्द वास्वत में यहोबा का आनन्द है, यह निश्चय करने की तीसरी जाँच इस बात पर निर्भर है, कि हमें परमेश्वर की उपस्थिति का बोध होता है।

लगातार परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करने के परिणाम स्वरुप यह आनन्द हममें आता है। जितना अधिक समय हम परमेश्वर की उपस्थिति में बिताते हैं, उतना ही अधिक परमेश्वर का स्वर्गीय आनन्द हम पायेंगे। जब हम देखते हैं कि परमेश्वर की

उपस्थिति लगातार हमारी सहायता और अगुवाई करती है, तो यह आनन्द हमें प्राप्त होता है। बाइबल के पढ़ने और काफी प्रार्थना करने से जो बड़ा आनन्द हमें मिलता है, वह वास्तव में स्वर्गीय आनन्द है। यदि हममें ईर्ष्या य घृणा जैसा कोई पाप है तो हम परमेश्वर की उपस्थिति का बोध खो बैठते हैं, और उसके कारण के लिये हमें एक बार फिर से अपने पापों और कमजोरियों से सच्चा पश्चाताप करने की कष्टदायी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। केवल तब ही यह आनन्द फिर से प्राप्त किया जायेगा। प्रभु यीशु की उपासना करने, परमेश्वर के वचन को पढ़ने, और प्रार्थना में प्रभु यीशु की निकट संगति के द्वारा हम इस आनन्द के निरन्तर बने रहने और बढ़ते जाने के विषय निश्चित हो सकते हैं।

४. शंका-विहीन आज्ञाकारिता:

यह निश्चित करने के लिये कि हमारा आनन्द वास्तव में यहोबा की ओर से है, चौथी जाँच इस बात से है, कि हम परमेश्वर के वचन की बिना शंका आज्ञा मानते हैं।

यिर्मयाह १५:१६ में हम पढ़ते हैं, कि परमेश्वर के वचन को ग्रहण करने और वचन की आज्ञा मानने के द्वारा हम आनन्द पाते हैं। परमेश्वर ने यिर्मयाह को ऐसे लोगों का जो उससे घृणा करते थे, भविष्यद्वक्ता बना कर एक बड़ा कठिन काम सौंपा। वे उस पर हँसते थे, उसे ठठ्ठों में उड़ाते थे और यहाँ तक की उन्होंने उसे एक गढ़े में फेंक दिया था। फिर भी यिर्मयाह परमेश्वर का वचन ग्रहण करता रहा और उसकी आज्ञा का पालन करता रहा; इस प्रकार निरन्तर उसका आनन्द भरा रहा, बढ़ता रहा। इस प्रकार परमेश्वर के वचन का पालन करने के द्वारा हमारा आनन्द बढ़ता जाता है।

५. आत्माओं का उद्धार:

हमारा आनन्द वास्तव में यहोबा की ओर से है इसकी पाँचवीं जाँच इस तथ्य पर आधारित है कि हम अन्य आत्माओं को उद्धार के आनन्द में ले आते हैं।

१ थिस्सलुनीकियों २:२० में पौलुस ने थिस्सलुनिका के विश्वासियों को इस प्रकार लिया, "हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही हो।" प्रेरितों के काम १४ अध्याय में हम पढ़ते हैं, किस प्रकार से सतावे की दशा के मध्य थिस्सलुनीके के लोगों ने प्रभु के वचन को ग्रहण किया और विश्वास योग्य बने रहे। पौलुस ने रोम से यह लिखा कि उनके कारण वह अपनी यातनाओं को भूल सका। उसने कहा क वे उसकी बड़ाई और आनन्द थे। वह आशा करता था कि वे मुकुट के योग्य होकर परमेश्वर के सामने खडे होवेंगे। इसी प्रकार से जब हम बहुत समय के बाद ऐसे लोगों से मिलते हैं जो हमारी प्रार्थनाओं, प्रेम, सेवा एवं त्याग के द्वारा बचे हैं, तो हमारा आनन्द बहुत महान होगा। हम स्वर्ग में ऐसे अनेक लोगों से मिलते हैं जो हमरी प्रार्थनाओं, प्रेम,सेवा एवं त्याग के द्वारा बचे हैं, तो हमारा आनन्द बहुत महान होगा। हम स्वर्ग में ऐसे अनेक लोगों को देखेंगे जो हमारे जीवन और गवाही के द्वारा बचाये गये थे। इसीलिये हमें निरन्तर अपने मित्रों, सम्बन्धियों और प्रिय लोगों के लिये, जिन्होंने नया जीवन नहीं पाया है, प्रार्थना करना चाहिये।

६. स्थिरता:

हमारा आनन्द वास्तव में यहोबा की ओर से है, इसका छठवाँ परीक्षण इस बात पर निर्भर है कि वह किसी भी सतावे में स्थिर रहता है।

प्रेरितों के काम ५:४१ में हम पढ़ते हैं, कि जब प्रेरितों को सताया गया, तब कुड़कुड़ाने के बदले वे मगन हो गये थे। उनकी निन्दा की गई, उन्हें पीटा गया, बाहर निकाल दिया गया, उनसे घृणा की गई। परन्तु फिर भी वे आनन्दित थे, क्योंकि उन्होंने स्वयं को इस योग्य गिना की प्रभु यीशु के निमित्त अपमान सह सकें। इसी प्रकार जब प्रभु यीशु

के निमित्त हमारी निन्दा और अपमान होता है, तो हम अपने अन्दर एक अनोखा आनन्द पाते हैं। "धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएँ और झूठ बोल-बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है, इसलिये की उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे, इसी रीति से सताया था" (मत्ती ५:११, १२)। इसलिये सर्वप्रथम आपके पास यहोबा का आनन्द होना चाहिए। मनुष्य के स्तर पर यदि कोई आपको अस्वीकार कर दे, आपसे घृणा करे या आपका तिरस्कार करे तो अनेक दिनों तक आपकी नींद और भूख गायब हो जायेगी। परन्तु जब आपके पास यहोबा का आनन्द होता है तो यह आनन्द नहीं घटता। इतना ही नहीं परन्तु जब आप यातना, निन्दा और अपमान से होकर जाते हैं, तब इस आनन्द में और अधिक बुद्धि होती है। शत्रु हमें निराश करने के लिये भरसक प्रयत्न करता है। इसीलिये १ पतरस ४:१२-१४ में प्रेरित यह कहता है, "हे प्रियो, जो दु:ख रुपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिये तुम में भड़की है, इससे यह समझकर अचम्भा न करो कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है। पर जैसे जैसे मसीह के दु:खों में सहभागी होते हो, आनन्द करो, जिससे उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और मगन हो। फिर यदि मसीह के नाम के लिये तुम्हारी निन्दा की जाती है, तो धन्य हो क्योंकि महिमा का आत्मा, जो परमेश्वर का आत्मा हे, तुम पर छाया करता है। जब दूसरों के द्वारा हमारे साथ दुर्व्यवहार किया जाता है, या हम से घृणा की जाती हैं, या हमें श्राप दिया जाता है, तब भी यह आनन्द हमारे पास से चला नहीं जाता।

७. **स्वर्गीय घराना:**

यह निश्चित करने के लिये कि हमारा आनन्द सचमुच में यहोबा की ओर से है, सातवीं बात इस तथ्य पर आधारित है, कि हमें अपने स्वर्गीय घर की बड़ी आशा रहती है। यह आनन्द इस आशा के द्वारा हमारे निर्दोष रुप में, अत्यन्त आनन्दपूर्वक परमेश्वर की

उपस्थिति में लाये जायेंगे। इस पृथ्वी पर हम कमियों और असफलताओं से भरे हुये है। परन्तु जब प्रभु यीशु मसीह अपने द्वितीय आगमन के समय अपनी महिमा में अपने सब स्वर्गदूतों के साथ प्रगट होंगे तब हम उनके सामने दोष-रहित होंगे। उस समय, यहाँ तक कि स्वर्गदूत भी हममें दोष नहीं देख सकेंगे। उस समय, यहाँ तक कि स्वर्गदूत भी हममें दोष नहीं देख सकेंगे। एक दिन हमें परमेश्वर को आमने-सामने देखने की आशा है। इसीलिये हमें प्रभु की मेज में योग्यतापूर्वक भाग लेना चाहिये, ताकि उस दिन हम प्रभु यीशु को आनन्दपूर्वक आमने-सामने देख सकें।

८. दूल्हा-दुल्हन सम्बन्ध:

इस बात का आठवाँ परीक्षण कि हमारा आनन्द वास्तव में यहोबा की ओर से है इस तथ्य पर आधारित है कि हम दूल्हे (प्रभु यीशु मसीह) से उसकी दूल्हन के रुप में मिलते है।

यह आनन्द उनको मिलता है जो प्रभु के साथ उसकी दुल्हन के समान पूर्णत: एक रुप हो जाते हैं। जिस प्रकार से दुल्हन और दूल्हा सिद्ध प्रेम में अपने विचार और अधिकारों (सम्पत्ति आदि) को एक दूसरे के साथ बाँटते हैं, उसी प्रकार से जब हम प्रभु यीशु के साथ जोड़े जाते हैं, तब हर चीज में उसके भागीदार बन जाते हैं। हम उसके अनन्तकाल के भागीदार और साथी चुने गये हैं। जिनके पास ऐसा आनन्द और ऐसी आशा नहीं होती, उनके पास आगे बाट जोहने हेतु कुछ नहीं होता, तथा उनके पास दूसरों के साथ बाँटने के लिये भी कुछ नहीं होता। कुछ पति अपनी पत्नियों से अच्छा भोजन माँगते है, और जब उन्हें वह नहीं मिलता तब वे अति कोपित हो जाते हैं। यह इस कारण होता है, क्योंकि उन्हें यह मालूम नहीं है कि यहोबा का आनन्द क्या है, तथ वे उस आनन्द को अपनी पत्नियों के साथ बाँट सकने में असमर्थ हैं। वे केवल बहुत-सी चीजें माँगते हैं। अनेक पति-पत्नियों में एकता नहीं होती। हम इस स्वर्गीय आनन्द को दूसरों के साथ बाँट सकते हैं और जब हम ऐसा करते हैं, तब वह बढ़ता जाता है।

९. घनिष्ठ परिचय:

इस बात की नवीं जाँच कि वास्तव में हमारा आनन्द यहोबा की ओर से है, इस तथ्य पर आधारित है, कि परमेश्वर के साथ हमारा घनिष्ठ परिचय मित्रभाव होता है। यदि हम अपने घुटनों पर आकर तथा अपने विचारों और इच्छाओं का स्वतन्त्रतापूर्वक उसके साथ आदान-प्रदान करेंगे, तो वह भी हमें दर्शायेगा कि वह हमें क्या सिखाना चाहता है, उसे प्रयन्न करने के लिये हम क्या कर सकते हैं; और इस प्रकार हमारा आनन्द बढ़ता जायेगा। यहोबा ने अपने विचार इब्राहीम को बताये, जैसा कि हम उत्पत्ति १८:१७, १८ में पढ़ते हैं, "तब यहोबा ने कहा, यह जो मैं करता हूँ सो क्या इब्राहीम से छिपा रखूँ! इब्राहीम से तो निश्चय एक बड़ी और सामर्थी जाति उपजेगी, और पृथ्वी की सारी जातियाँ उसके द्वारा आशीषी पायेगी।" परमेश्वर कहता है कि, इब्राहीम उसका मित्र है, और वह उससे कुछ नहीं छिपा सकता। महान और सामर्थी परमेश्वर इब्राहीम से यह कर रहा है; वह सदोम और अमोरा के लोगों की दुष्टता के कारण उन्हें नाश करने के बारे में इब्राहीम से विचार विमर्श कर रहा है। बैतनियाह में हमारे प्रभु यीशु ने भी मरियम और मरथा के साथ विचार विमर्श अवश्य किया होगा। जब भी वह यरुशलेम से उनके घर गया, उसने उन्हें अवश्य बताया होगा कि वह मन्दिर में कैसे गया और कैसे चारों ओर भ्रष्टता पाई। इसी प्रकार से हमें भी अपने प्रभु यीशु के साथ विचारों का आदान-प्रदान अवश्य करना चाहिये। जब भी हम प्रार्थना करते हैं, तब कुछ न कुछ माँगते है, परन्तु हमारा प्रभु हमने क्या कहना चाहता है, यह जानने के लिये हम उसकी बाट नहीं जोहते। अनेक बार भोर के समय, मैंने यह अनुभव किया है, कि प्रभु मुझे कुछ बता रहा है या मुझे कहीं जाने के लिये कह रहा है। यह जानना बड़े आनन्द की बात है कि हमारा प्रीाु हमारे साथ क्या साझेदारी करना चाहता है, और इससे भी बड़ा आनन्द उस कार्य के करने में है, जो वह हमें उसके लिये करने को कहता है।

परमेश्वर के वचनों से हमने देखा है, कि यहोबा का आनन्द क्या है, और कैसे कोई भी व्यक्ति उस आनन्द को प्राप्त कर सकता है। वही आनन्द हमारी सामर्थ बन जायेगा। काश, हमारा प्रभु यीशु हमें ऐसा आनन्द दे और उसे बढ़ाता जाये। आमीन।